International Journal of Home Science 2021; 7(1): 01-03

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2021; 7(1): 01-03
© 2021 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 22-10-2020
Accepted: 02-12-2020

प्रेरणा तिवारी
शोध छात्रा, गृह विज्ञान, महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

नीलमा कुँवर
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, ईसीएम, गृह विज्ञान महाविद्यालय, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

तृप्ति सिंह
एच. ओ. डी, आर. बी. एस कॉलेज आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
प्रेरणा तिवारी
शोध छात्रा गृह विज्ञान, महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

निम्न आय वर्गीय परिवारों में धन के व्यय का पारिवारिक जीवक चक्र की अवस्थाओं पर प्रभाव

प्रेरणा तिवारी, नीलमा कुँवर एवं तृप्ति सिंह

सारांश
सामान्यतः सभी परिवार कुछ विशिष्ट अवस्थाओं में से होकर गुजरते हैं। इन अवस्थाओं को संयुक्त रूप से पारिवारिक जीवन–चक्र कहा जाता है। प्रत्येक एकाकी परिवार एक विवाहित युगल से आरम्भ होता है फिर बच्चे होते हैं, उनके पालन–पोषण व शिक्षा की व्यवस्था करनी होती है। बच्चे बड़े होकर आत्म निर्भर हो जाते हैं। वे नौकरी अथवा व्यवसाय में लग जाते हैं तथा विवाहित होकर अन्यत्र चले जाते हैं परिवार में फिर वही विवाहित युगल रह जाता है, हालांकि अब वह वृद्ध हो जाता है। परिवार की इन्ही अवस्थाओं को पारिवारिक जीवन चक्र कहा जाता है।

मुख्य शब्द – आय, धन, व्यय, अवस्थायें।

प्रस्तावनाः–
आधुनिक युग में विकास व अन्य कार्यों के लिए धन का जीवन में विशेष महत्व है। उच्च रहन–सहन से लेकर जीवन निर्वाह तक प्रत्येक परिवार को धन पर आश्रित होना पड़ता है। प्रत्येक परिवार की जीवन व्यवस्था या तंत्र एक निश्चित प्रकार का होता है तथा यह एक निर्धारित चक्र का अनुगमन करना है पारिवारिक जीवन चक्र निरन्तर गतिशील रहता है। जीवनचक्र गतिशील रहने के कारण इसमें भिन्न समय में परिवर्तन होते रहते हैं। यद्यपि दो परिवारों की व्यवस्था एक समान नहीं होती है और प्रत्येक अवस्था की धन सम्बन्धी मांग अलग–अलग होती है। घन से परिवार को अधिकतम संतुष्टि तभी मिल सकती है जब उसका समुचित व्यवस्थापन हो। पारिवारिक जीवन चक्र की विभिन्न अवस्थाओं में मध्यम आय समूह वर्गो द्वारा बजट की विभिन्न मदों पर किया जाने वाला व्यय अलग–अलग होता है। जिससे निष्कर्ष निकलता है कि जीवनचक्र की अवस्थायें बजट को सार्थक रूप से प्रभावित करतीं हैं। धन के उपयोग की योजना का सबसे सामान्य तरीका बजट बनाना है। पारिवारिक बजट में एक निश्चित अवधि में किसी प्रकार की आय और व्यय का विस्तृत ब्योरा दिया जाता है। अनेक विद्वानों ने पारिवारिक बजट को परिभाषित किया है। केग एवं रश के अनुसार बजट भूत के व्यय, भविष्य के अनुमानित व्यय और वर्तमान समय के मदों पर निश्चित व्यय का लेखा–जोखा है। वर्मा देशपाण्डे (1974) के अनुसार परिवार व्यय की पूर्व योजना को ही पारिवारिक बजट कहते हैं। पारिवारिक बजट में एक परिवार की विशिष्ठ समय की अनुमानित आय और व्यय का ब्योरेवार वर्णन होता है।

उद्देश्य
1. निम्न आय वर्गीय परिवार का आय के मदों पर व्यय का प्रतिशत ज्ञात करना।
2. सर्वाधिक आय की पर्याप्तता तथा सर्वाधिक ऋण लेने की आवश्यकता पारिवारिक जीवन चक्र की किस अवस्था में आवश्यकता पड़ती है इसका अध्ययन करना।

अध्ययन पद्धति
शोध कार्य हेतु उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले का चुनाव किया गया है जिसमें 6 वार्ड लिए गए हैं जिसमें से प्रति वार्ड 50 परिवार (25 शिक्षित एवं 25 अशिक्षित) का चयन किया गया है। इस प्रकार कुल 300 परिवारों का चयन किया गया है। आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए प्रश्नावली को तैयार किया गया है। इसमें चर और अचर आश्रितों का उपभोग किया गया है। सांख्यकीय उपकरण प्रतिशत, मध्य आदि का उपयोग किया गया है।

परिणाम

सारिणी–1 अनुमानित पारिवारिक आय

क्र0 सं0	विकल्प	प्रारम्भिक अवस्था				विस्तृत अवस्था								संकुचित अवस्था			
						1–3 बच्चे				3 से अधिक							
		शिक्षित		अशिक्षित		शिक्षित		अशिक्षित		शिक्षित		अशिक्षित		शिक्षित		अशिक्षित	
		सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:
1.	रू0 400 – 800	2	4	4	8	1	4	3	12	1	4	3	12	8	16	31	62
2.	रू0 801 –1200	10	20	8	16	4	16	8	32	4	16	5	20	11	22	12	24
3.	रू0 1201–1600	12	24	12	24	5	20	7	28	6	24	9	36	15	30	2	4
4.	रू0 1601–2000	11	22	15	30	6	24	3	12	6	24	5	20	8	16	2	4
5.	रू9 2001–2400	9	18	10	20	3	12	4	16	4	16	2	8	4	8	1	2
6.	रू0 2401–2800	6	12	1	2	6	24	0	0	4	16	1	4	4	8	2	4
	कुल	50	100	50	100	25	100	25	100	25	100	25	100	50	100	50	100

निम्न आय वर्ग के लोग भारत में गरीबी रेखा के नीचे (ठच्र्) की श्रेणी में आते हैं। उन्हें नकारात्मक स्थितियाँ जैसे घटिया आवास, बेघर, अपर्याप्त भोजन, स्वास्थ्य असुरक्षा, अपर्याप्त बाल देखभाल, स्वास्थ्य देखभाल की पहुँच में कमी, असुरक्षित पड़ोस और बच्चों के लिए अल्पपोषित स्कूल का सामना करना पड़ता है जो उनपर तथा उनके बच्चों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। कम आय वाले लोग सामाजीकरण करने में अधिक समय व्यतीत करते हैं। कम आय के माता–पिता के तनाव का स्तर बढ़ता है। जिससे परिवार के रिश्तों की गतिशीलता पर प्रभाव पड़ता है। यदि परिवार की आय में वृद्धि होती है तो बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों, भावनात्मक और शारीरिक भलाई को बढ़ावा मिलता है।क्योंकि बच्चों के जीवन के सभी क्षेत्र गरीबी से प्रभावित होते है। जैसे – घर, स्कूल, दोस्त। हर व्यक्ति के लिए गरीबी एक अभिशाप है। गरीबी बच्चों के दिमाग के विकास के तरीके को बदल देती है। गरीबी या तो आपको डस सकती है या आपको मजबूत बना सकती है। कार्ल ने कहा है कि गरीब होना आपका बहाना या आपकी प्रेरणा हो सकती है। यदि आप अपने जीवन को बदलने और इसके लिए मरने की इच्छा रखते हैं तो आपके सफल होने की अधिक सम्भावना रहती है और आप गरीबी से डटकर मुकाबला करते हैं। इसके लिए शिक्षा अपना महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। गरीबी और निम्न आय की स्थिति विभिन्न प्रकार के प्रतिकूल स्वास्थ्य परिणामों से जुड़ी होती है जिसमें छोटी जीवन प्रत्याशा, शिशु मृत्यु दर की उच्च दर और उच्च मृत्यु दर शामिल है। इसलिए निम्न आय की स्थिति की आबादी हर राज्य और देश में असमानताओं को मिलती है।

सारिणी–2 अनुमानित पारिवारिक व्यय

क0 सं0	विकल्प	प्रारम्भिक अवस्था		विस्तृत अवस्था				संकुचित अवस्था	
				1–3 बच्चे		3 से अधिक			
		शिक्षित	अशिक्षित	शिक्षित	अशिक्षित	शिक्षित	अशिक्षित	शिक्षित	अशिक्षित
		प्रतिशत	प्रतिशत	प्रतिशत	प्रतिशत	प्रतिशत	प्रतिशत	प्रतिशत	प्रतिशत
1.	भोजन	57	55	57	59	60	62	65	67
2.	वस्त्र	10	8	7	4	5	4	3	3
3.	आवास	9	7	5	5	5	7	4	5
4.	शिक्षा	0	0	6	5	6	3	0	0
5.	स्वास्थ्य	2	5	5	7	6	7	12	12
6.	मनोरंजन	7	9	5	7	6	7	3	2
7.	प्रकाश/ईंधन	8	8	9	7	8	6	5	6
8.	अन्य व्यय	2	4	4	4	3	3	8	5
9.	बचत	5	4	2	2	1	1	0	0
	कुल	100	100	100	100	100	100	100	100

भारत के निवासियों को आय के अनुसार तीन वर्गों में विभाजित किया है। प्रति व्यक्ति आय रू0 6,16,000 के साथ सम्पंन 11 करोड़ व्यक्ति 14 करोड़ व्यक्ति प्रति व्यक्ति 2,10,000 प्रति व्यक्ति कमाते हैं। तीसरा वर्ग 14 करोड हैं जो प्रति वर्ष रू0 91,000 से कम आय अर्जित करते हैं। 80 प्रतिशत जनसंख्या निम्न आय वर्ग की है जो परिवार को चलाने के लिए अपनी आय का विभिन्न मदों जैसे भोजन, वस्त्र, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि पर व्यय करते हैं। परिवार के पास बहुत सारी जरूरत होती है और वे चाहते हैं कि सभी दुर्लभ संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा करे। इस स्थिति को देखते हुए कम आय प्राप्त करने वाले घर, भोजन और स्वास्थ्य पर अपनी आय का अधिक भाग खर्च करते हैं। निम्न आय वर्ग के लोगों के पास अपना घर नहीं होता इसलिए उन्हें घर का किराया भी नहीं देना पड़ता है। इसलिए हमारी सरकार ने सबको घर मिले का सपना पूरा करने के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना चलाई है।

सारिणी–3 आय का स्वरूप

क0 सं0	विकल्प	प्रारम्भिक अवस्था				विस्तृत अवस्था								संकुचित अवस्था			
						1–3 बच्चे				3 से अधिक							
		शिक्षित		अशिक्षित		शिक्षित		अशिक्षित		शिक्षित		अशिक्षित		शिक्षित		अशिक्षित	
		सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:
1.	दैनिक	13	26	17	34	16	64	21	84	9	36	20	80	18	36	28	56
2.	मासिक	22	44	13	26	6	24	3	12	11	44	3	12	18	36	3	6
3.	साप्ताहिक	15	30	20	40	3	12	1	4	5	20	2	8	14	28	19	38
	कुल	50	100	50	100	25	100	25	100	25	100	25	100	50	100	50	100

साप्ताहिक आय प्राप्त करने वालों का शिक्षित लोगों का प्रतिशत 20 तथा अशिक्षित लोगों का प्रतिशत 8 पाया गया। पारिवारिक जीवन चक्र की संकुचित अवस्था में 36 प्रतिशत शिक्षित तथा 56 प्रतिशत अशिक्षित लोगों को दैनिक आय प्राप्त होती है। 36 प्रतिशत शिक्षित तथा 6 प्रतिशत अशिक्षित लोगों को मासिक आय प्राप्त होती है। 28 प्रतिशत शिक्षित तथा 38 प्रतिशत अशिक्षित लोगों को साप्ताहिक आय प्राप्त होती है। यह पाया गया कि सर्वाधिक निम्न आय वर्गीय दैनिक मजदूरी पर हैं इसलिए उन्हें गरीबी रेखा के नीचे रखा जाता है।

सारिणी–4 आर्थिक स्थिति से संतुष्ट

क्र0 सं0	विकल्प	प्रारम्भिक अवस्था				विस्तृत अवस्था								संकुचित अवस्था			
						1–3 बच्चे				3 से अधिक							
		शिक्षित		अशिक्षित		शिक्षित		अशिक्षित		शिक्षित		अशिक्षित		शिक्षित		अशिक्षित	
		सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:	सं0	:
1.	हाँ	11	22	15	30	1	4	5	20	4	16	10	40	2	4	2	4
2.	नहीं	20	40	32	64	14	56	15	60	14	56	5	20	40	80	45	90
9.	कभी–कभी	19	36	3	6	10	40	5	20	7	28	10	40	8	16	3	6
	कुल	50	100	50	100	25	100	25	100	25	100	25	100	25	100	25	100

जो क्रियाऐं धन अर्जित करने की अपेक्षा, संतुष्टि प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाती हैं उन्हें अनार्थिक क्रियायें कहते हैं। इस तरह की क्रियाऐं, सामाजिक उत्तरदायित्वों की पूर्ति, मनोरंजन या स्वस्थ्य लाभ के लिए की जाती है। लोग पूजा स्थलों पर जाते हैं। बाढ़ अथवा भूकम्प राहत कोष में दान देते हैं, स्वास्थ्य लाभ के लिए स्वयं को खेलकूद में व्यस्त रखते हैं। बागवानी करते हैं, रेडियो सुनते हैं, टेलीविजन देखते हैं या इसीतरह की अन्य क्रियाऐं करते हैं। ये कुछ उदाहरण अनार्थिक क्रियाओं के हैं। आप कितना कमा कर संतुष्ट हो सकते हैं, यह काफी कुछ हद तक आपके जीवन के कुछ दूसरे पहलुओं पर भी निर्भर होता है।

निष्कर्ष

परिवार चाहे किसी प्रकार का क्यों न हो उसे कुछ निश्चित अवस्थाओं में से होकर गुजरना पड़ता है। परिवार का प्रारम्भ प्रायः एक विवाहित युगल के द्वारा प्रारम्भ होता हैं तथा आत्मनिर्भर होकर अन्यत्र चले जाते हैं। जिससे बाद में वही विवाहित युगल शेष रह जाते हैं। उसी प्रकार अविवाहित व्यक्ति भी अपनी गृहस्थी जमाते हैं काफी लम्बे समय तक नौकरी करने के पश्चात अवकाश गृहण कर प्रौढ़ावस्था में पहुँच जाते हैं। कोई भी व्यक्ति विवाहित हो अथवा अविवाहित वह इन परिवर्तनों से नहीं बच सकता। उपर्युक्त पूर्ण परिवर्तन की अवधि ही पारिवारिक जीवन चक्र कहलाती है। इसके बीच में जो अल्पकालीन अथवा दीर्घकालीन परिवर्तन होते हैं वह पारिवारिक जीवन चक्र की विभिन्न अवस्थायें दर्शाते हैं।

सुझाव

1. पैसा कमाने पर व्यक्ति हमेशा जोर होना चाहिए। इसी से वित्तीय लक्ष्यों को हासिल किया जा सकता है। वित्तीय लक्ष्य बनाने, डेबिट कार्ड के खर्च पर नियंत्रण रखें, ज्यादा कर्ज न लेना, आपात स्थिति के फंड बनायें।
2. यदि हमारी आय का श्रोत कम है तो हमें व्यर्थ की सुख सुविधाओ पर धन नहीं खर्च करना चाहिए।
3. सफलता के लिए धन की कद्र करें, नैतिक मूल्यों पर ध्यान दें, बचत जरूर करें, व्यय प्रबन्धन करना सीखें। उसकी योजना बना लें, दिखावें में न पड़े।

संदर्भ

1. ओ'नील, बारबरा (2017) ''बजट के लाभ'' वित्तीय संसाधन प्रबंधन में विस्तार विशेषज्ञ, रटगर्स सहकारी विस्तार. https://njaes.rutgers.edu/sshw/message/message.php?p=Finance &m =351.
2. कालरा, दीक्षा वाधवा (2018). ''परिवार के बजट के महत्व के बारे में गृहिणियों के बीच जागरूकता'' इंटरनेशनल जर्न ऑफ एकेडमिक रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट आईएसएसएनः 2455–4197 इम्पैक्ट फैक्टर : RJIF 5.22 www.academicsjournal.com वॉल्यूम 3; अंक 2; मार्च 2018; पृष्ठ संख्या 1018–1021.